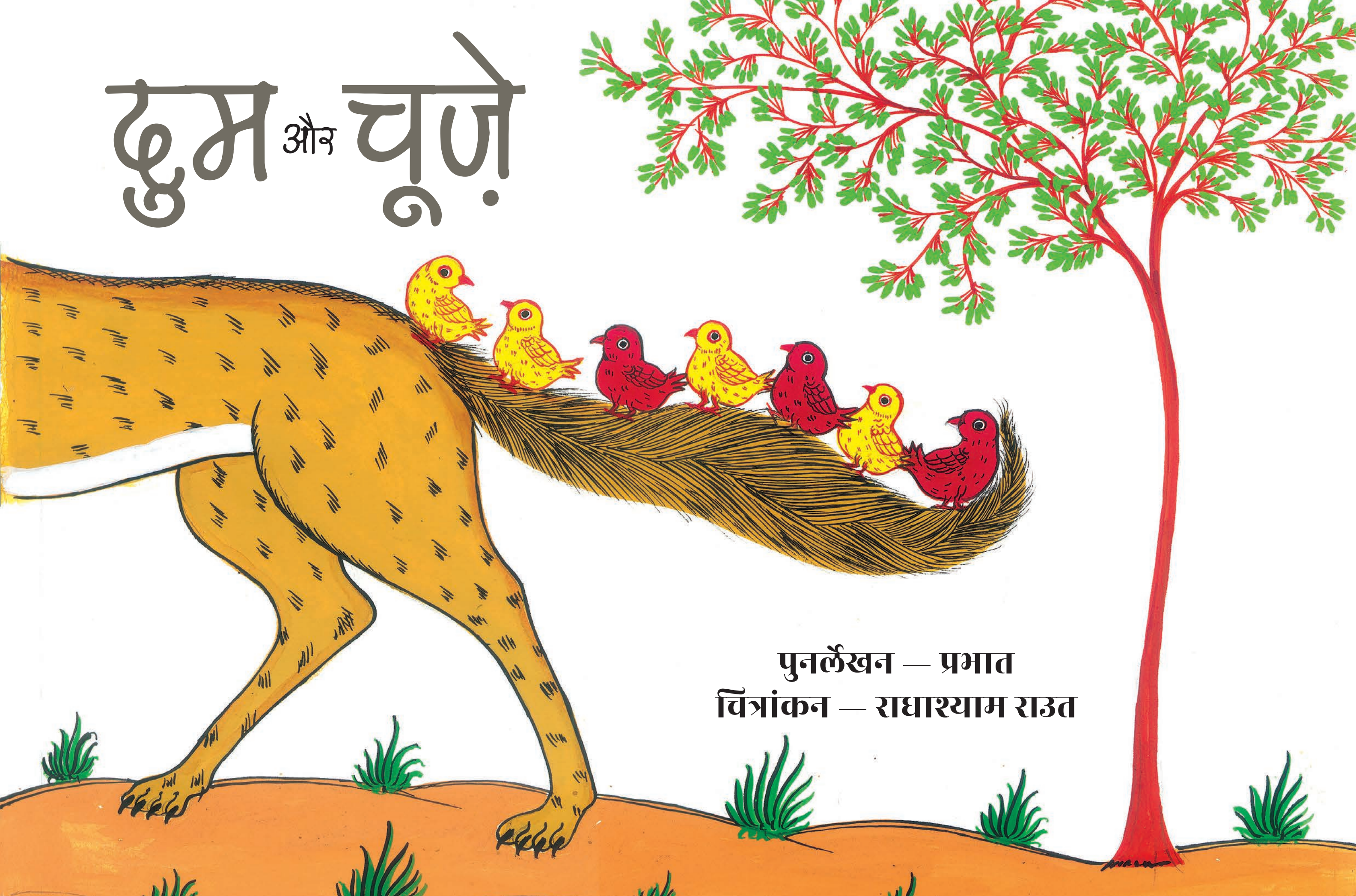


ढुढ और चूज़े



पुनर्लेखन — प्रभात
चित्रांकन — राधाश्याम राउत

21200—दुम और चूजे

ISBN 978-93-5292-849-1

प्रथम संस्करण

जनवरी 2025 पौष 1946

PD 5T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 70.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा दिलप्रीत पब्लिशिंग हाऊस, एफ-198, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली 110018 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- ❑ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- ❑ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ❑ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे,
बनाशंकरी III इस्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

- अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. वी. श्रीनिवासन
- मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार
- मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल
- मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार
- सहायक संपादक : मीनाक्षी
- सहायक उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

आवरण एवं चित्रांकन

राधाश्याम राउत

ले आउट

डिजिटल एक्सप्रेस

सहयोग हेतु आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) रचनाकारों, उनके परिजनों, संस्थानों या प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

परिषद्, रचनाकार, चित्रांकनकर्ता, एकलव्य, एकतारा संस्थाओं, अंजलि तिवारी, वेलफेयर अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, दिल्ली; अयाज़ अहमद, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीआईईटी, रा.शै.अ.प्र.प.; नई दिल्ली; किरण, पूर्व जेपीएफ़, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, पूर्व ग्राफ़िक डिज़ाइनर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; योगेश प्रताप सिंह वर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सीमा शर्मा, पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा, विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने हेतु प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों पारुल त्यागी और शिव मोहन यादव, सहायक संपादक (संविदा); सुरेन्द्र कुमार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मोहन सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा); के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

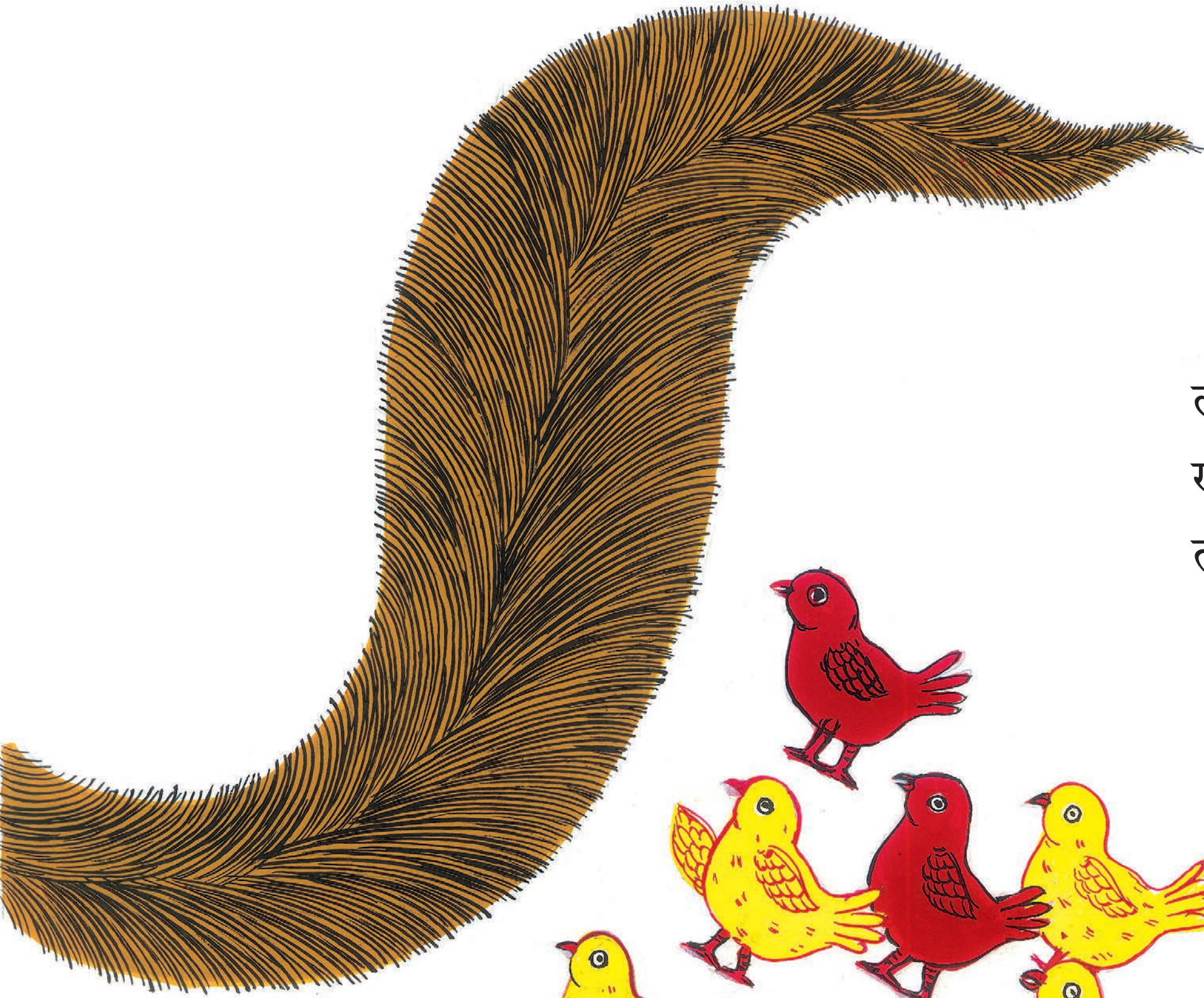
समीक्षा हेतु आभार ज्ञापन

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली; नीरा नारंग, आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्राची कालरा, सहायक आचार्य, गागी कॉलेज, नई दिल्ली; मालविका राय, शिक्षाविद्, नई दिल्ली; मुकुल प्रियदर्शिनी, सह-आचार्य (सेवानिवृत्त), मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; वर्षा सिंघल, शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम; श्वेता उप्पल, पूर्व मुख्य संपादक, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; संध्या सिंह, आचार्य, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सोनिका कौशिक, सहायक आचार्य, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; स्नेहा सबनिस, अनुवादक, राजभाषा संचालनालय, गोवा सरकार।

कहानियाँ बच्चों को पढ़ने का आनंद देती हैं और साथ ही कुशल बुद्धि, समस्या समाधान एवं तार्किक विश्लेषण की क्षमता का संवर्धन भी करती हैं। फाउंडेशनल और प्रीप्रेटरी स्टेज के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए कहानियाँ भाषायी कौशलों एवं आस-पास मौजूद विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में भी सहायता करेंगी। कहानियों में आए चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने और उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ते हुए अपनी बात कहने का अवसर तथा आत्मविश्वास भी देते हैं। किसी कहानी का कोई पात्र या घटना बच्चों के जीवन एवं चिंतन को प्रभावित भी कर सकता है और बच्चे उनके साथ तादात्म्य भी स्थापित कर सकते हैं। पढ़ी गई कहानी को अपनी कल्पना के आधार पर आगे बढ़ाने, अपनी कहानी स्वयं रचने का अवसर भी उपलब्ध होंगे। कहानियाँ बच्चों को स्वतंत्र पाठक और सृजनशील लेखक बनने में सहायता करेंगी।

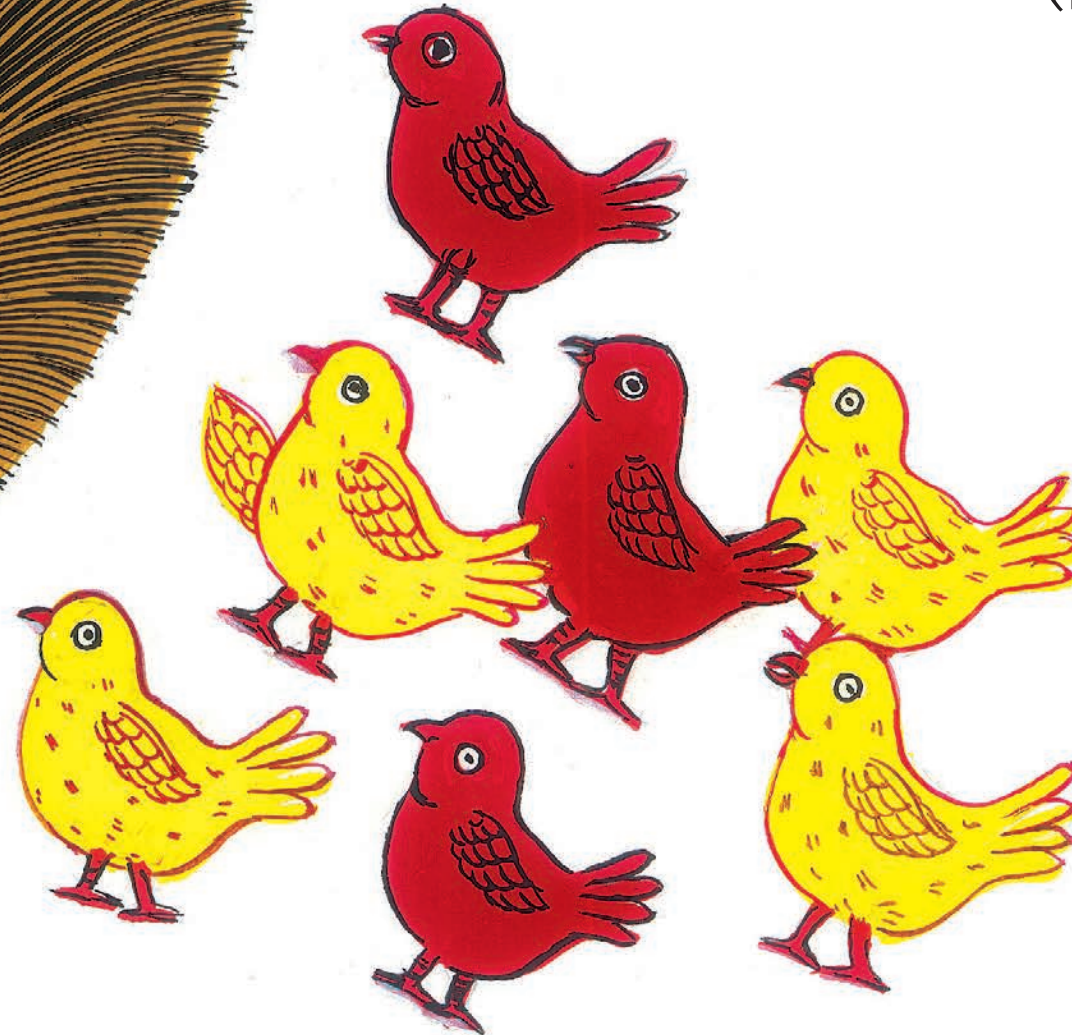
उषा शर्मा

आचार्य एवं कार्यक्रम समन्वयक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली



ढुढ और चूजे

लुढडी की झबरीली ढुढ पर बैठे थे चूजे।
खूब इंतज़ार किया, लेकिन अम्माँ न आई,
तु कौन आया...?



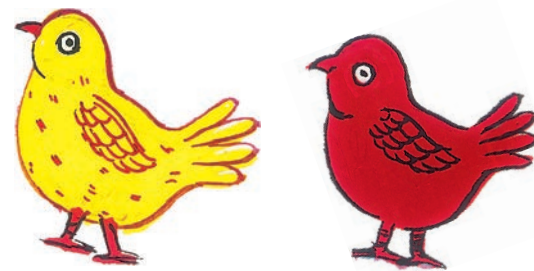
पुनर्लेखन — प्रभात
चित्रांकन — राधाश्याम राउत



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



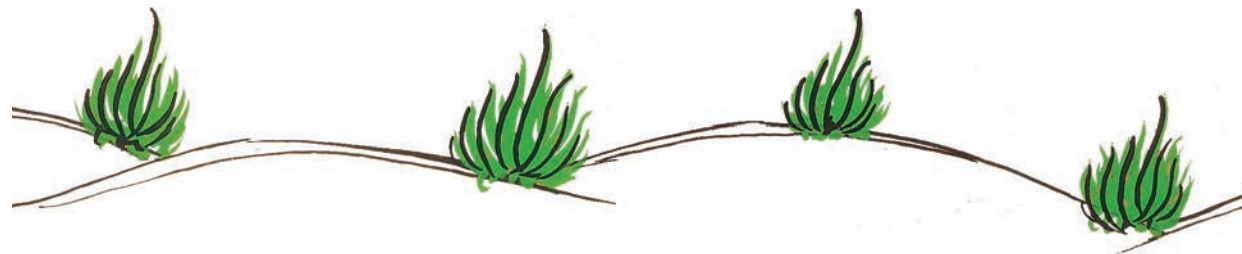
एक रात हवा पेड़ों में बैठी गीत गा रही थी। बाड़े की माँद में मुर्गी अपने सात चूज़ों के साथ सोते हुए हवा के गीत सुन रही थी।







दूर कहीं कुत्ते अनजानी छायाओं को
देखकर भौंक रहे थे। तभी एक सियार
कहीं से आया।



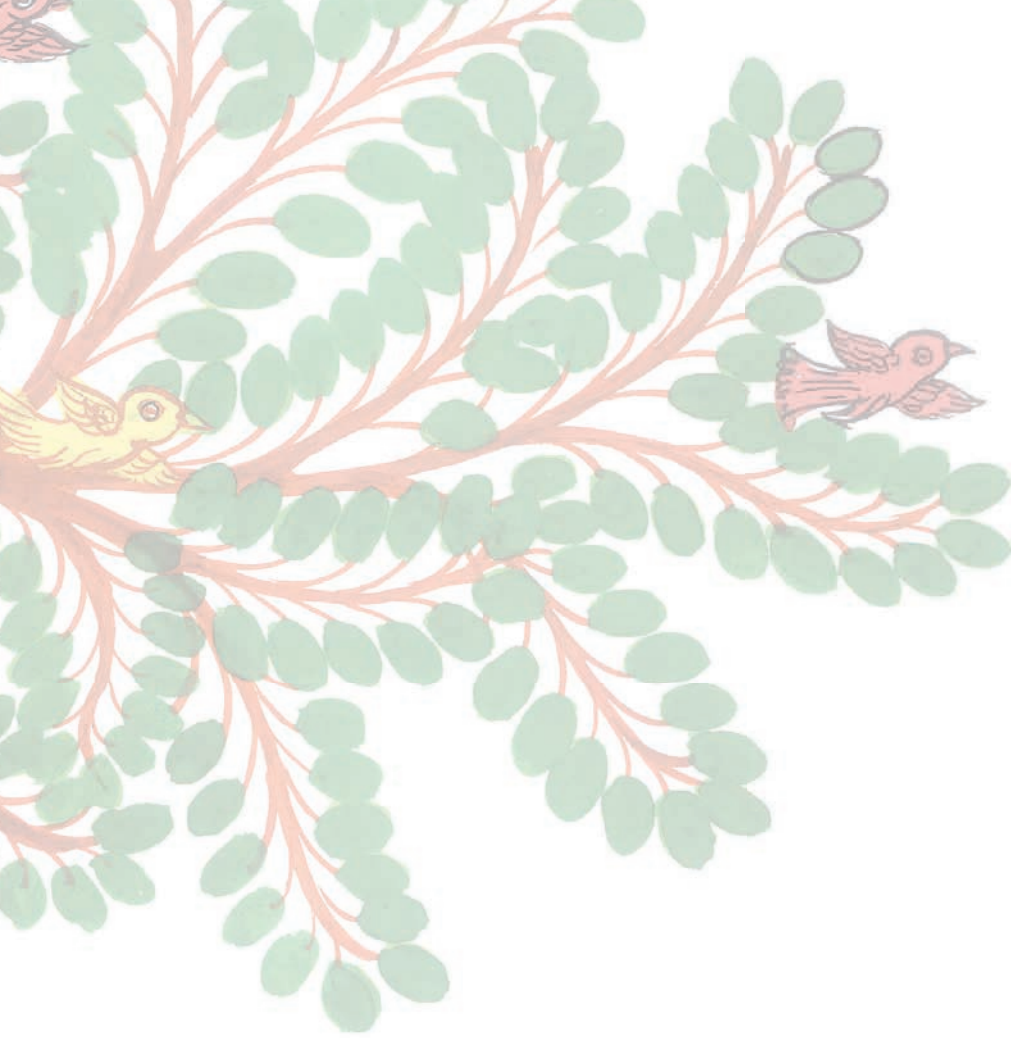




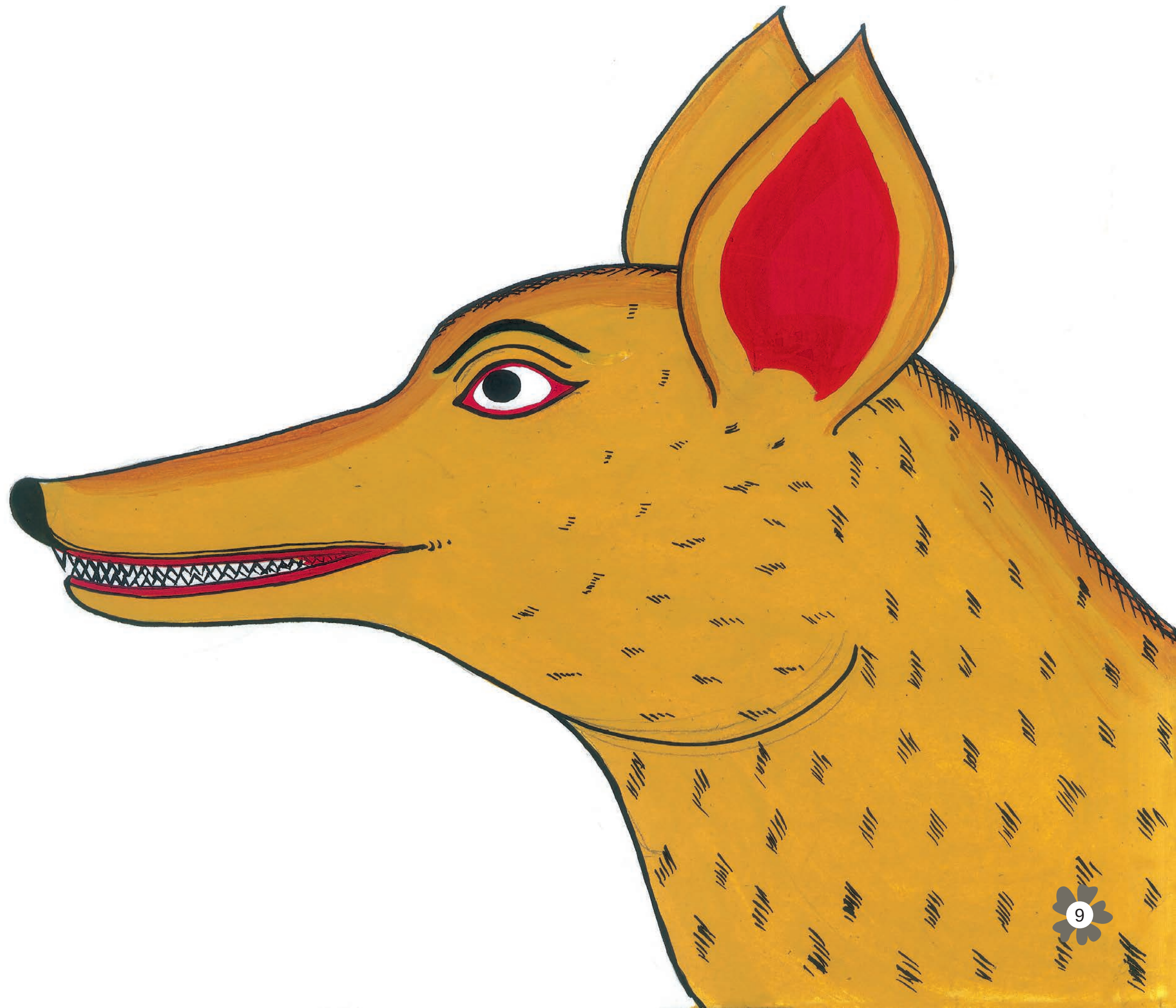
उसने मुर्गी की माँद का दरवाज़ा
खटखटाया। “इतनी रात को कौन आया
है?” — मुर्गी ने पूछा।







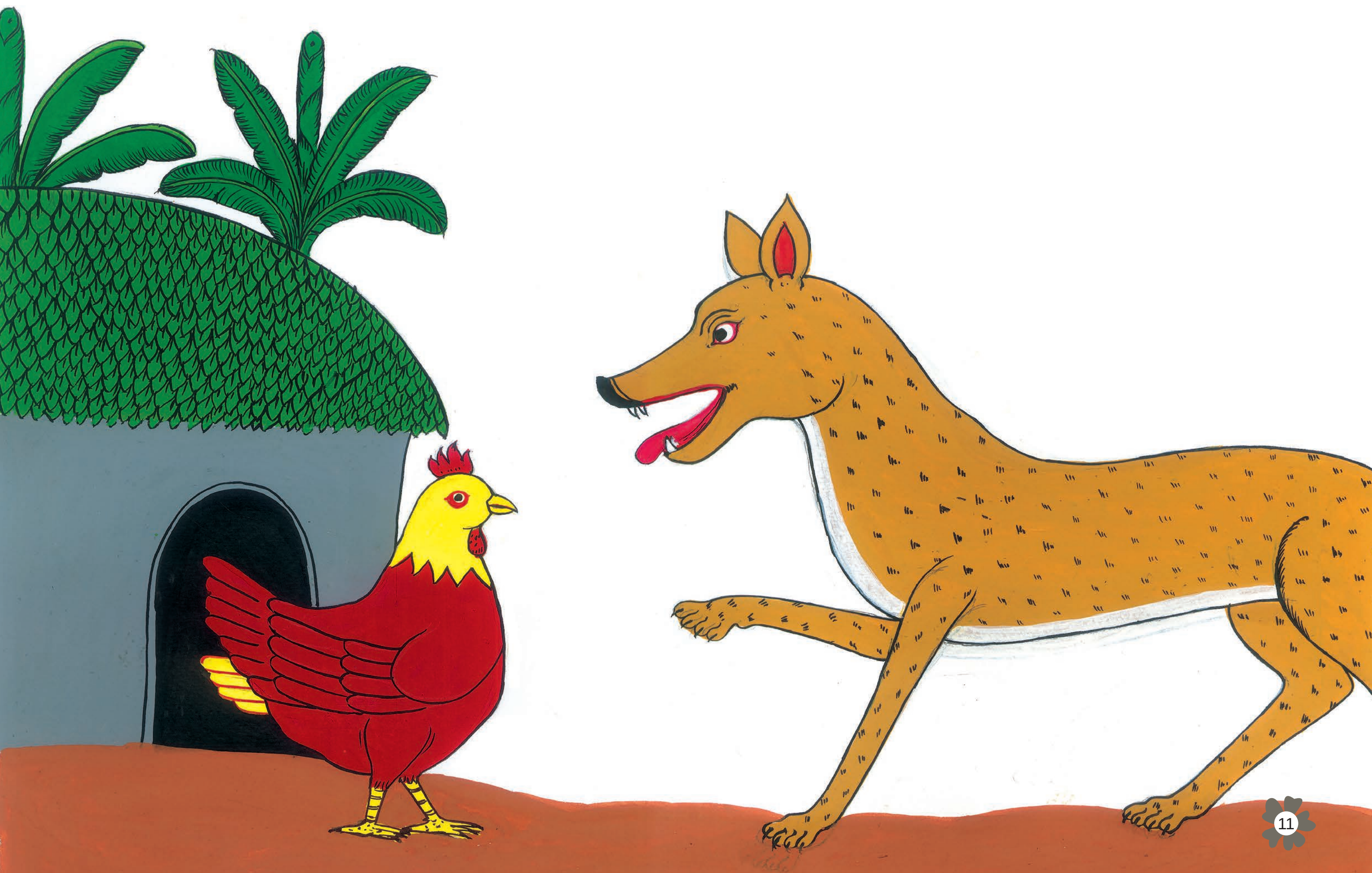
“मैं हूँ, तुम्हारा दोस्त! चरवाहे की
गाय का बछड़ा” — सियार ने आवाज़
बदलकर कहा।

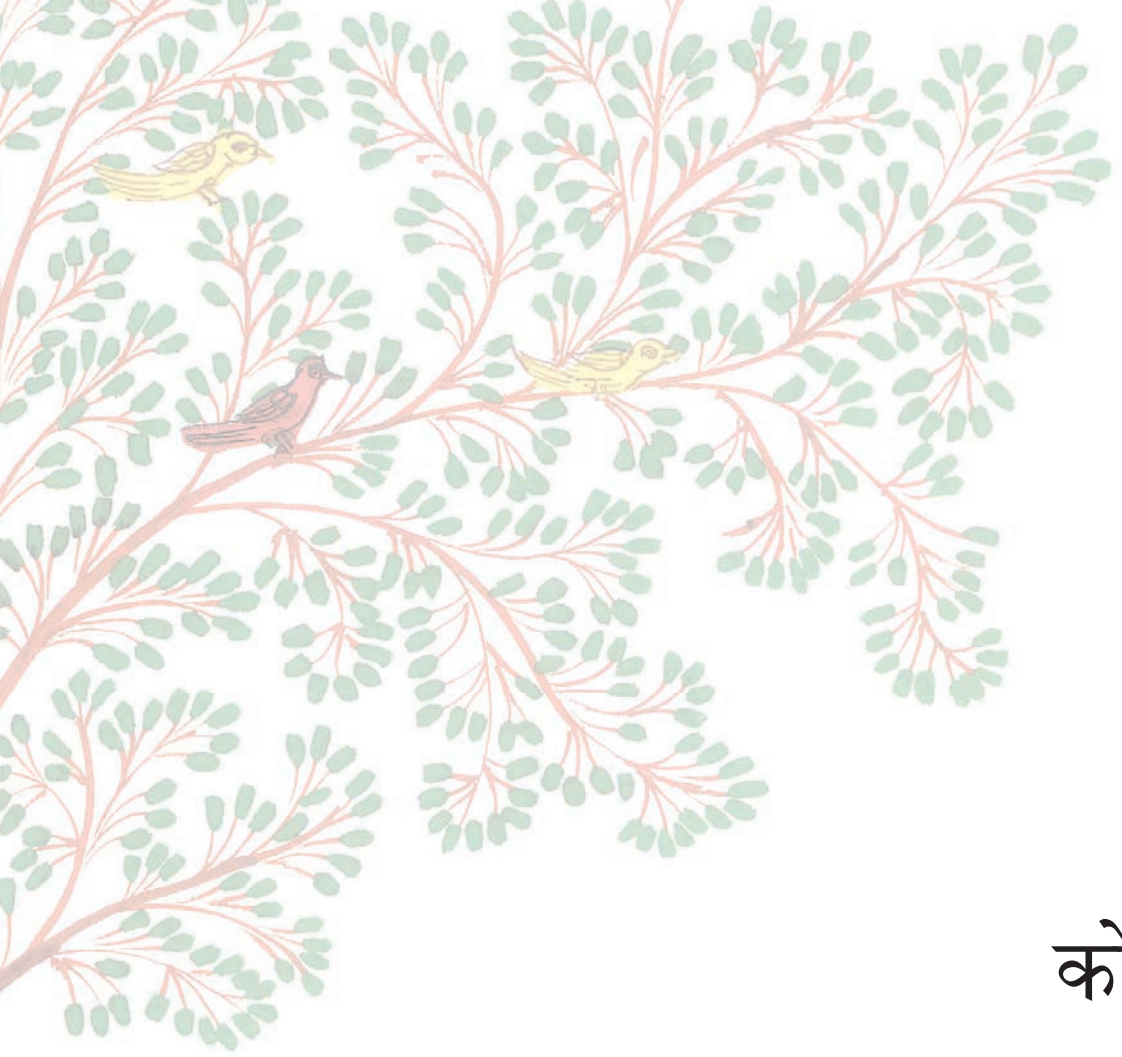




“अच्छा! तुम हो! हाँ, बोलो, क्या हुआ।” — मुर्गी ने माँद का फाटक खोलते हुए कहा।

“हुआ यह कि मैं दिनभर जंगल में भटकता रहा। मुझे खाने को कुछ नहीं मिला। बहुत तेज़ भूख लगी है।” — कहते हुए सियार मुर्गी को मुँह में दबाकर ले गया।





उसने उन पेड़ों के नीचे बैठकर मुर्गी
को खा लिया, जहाँ हवा गीत गा रही
थी। मुर्गी के छितरे हुए पंख देखकर हवा
उदासी के गीत गाने लगी।





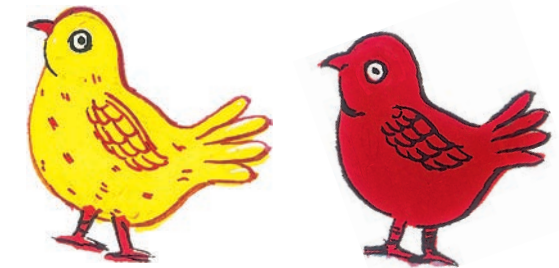


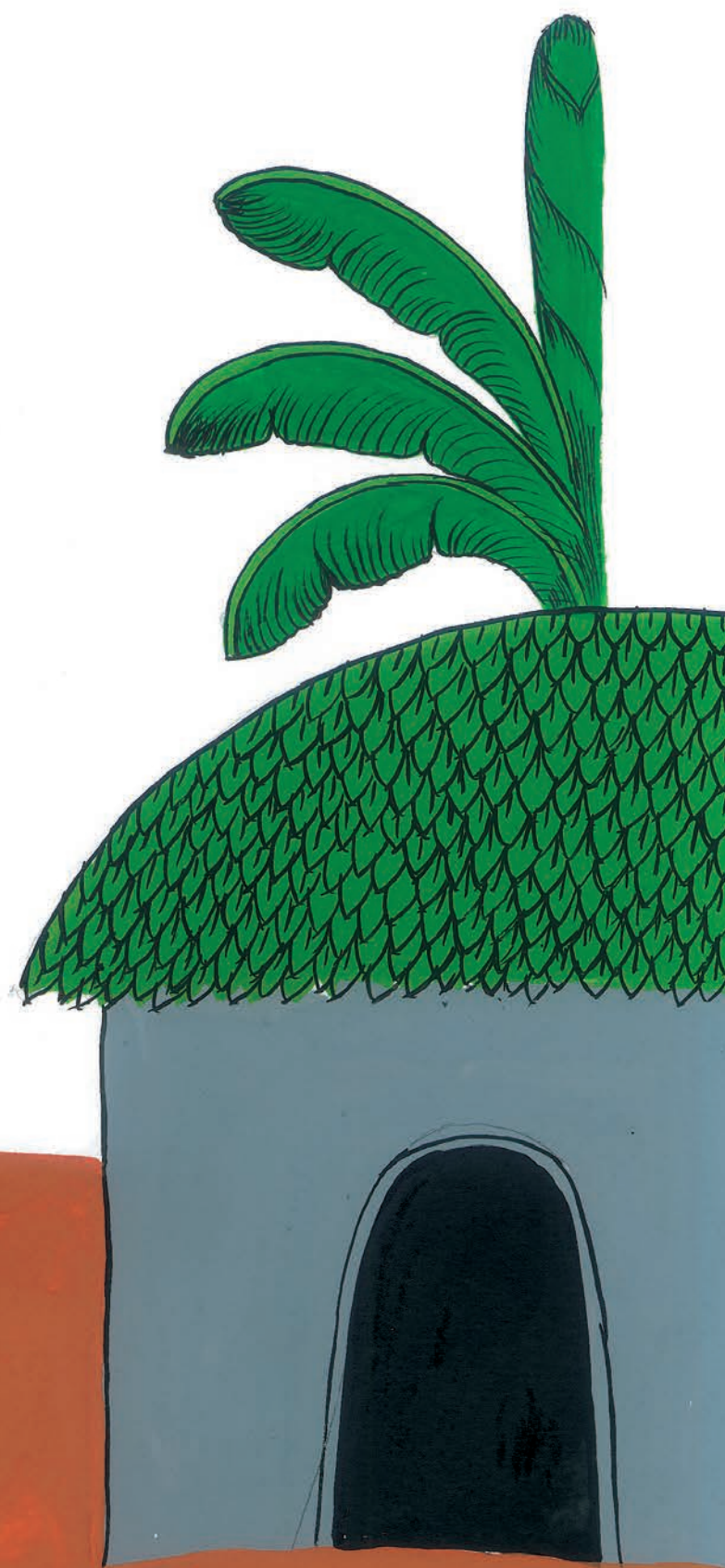
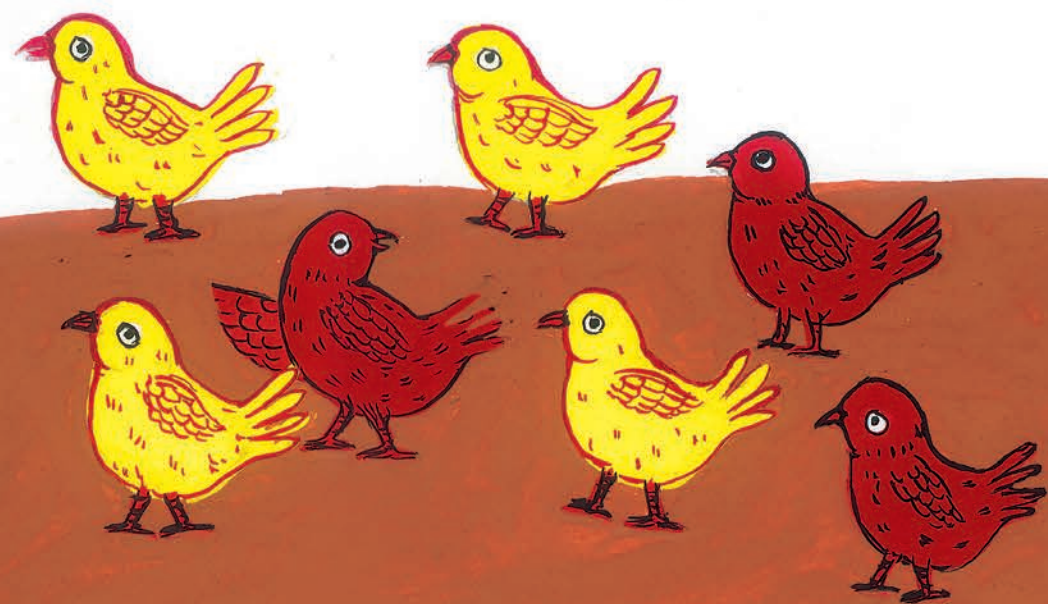
सियार का पेट भर गया था लेकिन
नीयत नहीं भरी थी। चूज़ों को भी खाने
का विचार करके वह वापस माँद में गया।

सियार ने जाकर फाटक खटखटाया।
चूज़े बोले— “कौन है? हमारी माँ घर
पर नहीं है।”

“मैं तुम्हारी माँ का ही संदेश लेकर
आया हूँ। उसने तुम्हें बुलाने मुझे भेजा
है” —सियार ने कहा। चूज़े अजनबी
को देखकर भयभीत हो गए।

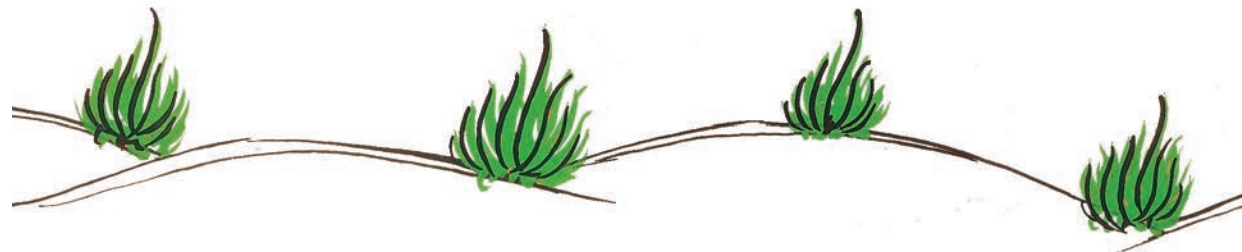
“डरो नहीं! मेरी झबरी पूँछ पर बैठ
जाओ। वहाँ जिन पेड़ों पर हवा गीत गा
रही है, वहीं तुम्हारी माँ है।”







सातों चूजे फुद-फुद फुदकते पूँछ पर
इधर-उधर बैठ गए। अँधेरी रात। हवा के
उदास गीत! रास्ते में सियार की दुम ने
धीमी आवाज़ में चूजों से कहा— “यह
दुष्ट तुम्हें पेड़ों के नीचे ले जाकर खा
जाएगा। इसने तुम्हारी माँ को वहीं ले
जाकर खाया है। तुम्हारी माँ कहीं नहीं
है। तुम चुपचाप वापस किसान के बाड़े
में लौट जाओ।”



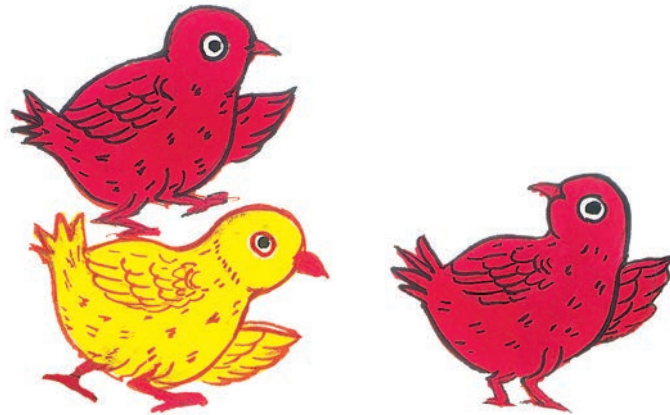




चूज़ों का चूज़ों जितना ही नन्हा दिल
यह सुनकर सिसक उठा।

“रोओ नहीं, कूदो” — सियार की
पूँछ ने कहा।

चूजे एक-एक करके पूँछ से गिरते
गए। सातों चूजे फुर्र-फुर्र उड़ते-दौड़ते,
उड़ते-दौड़ते किसान के बाड़े में जा
पहुँचे।





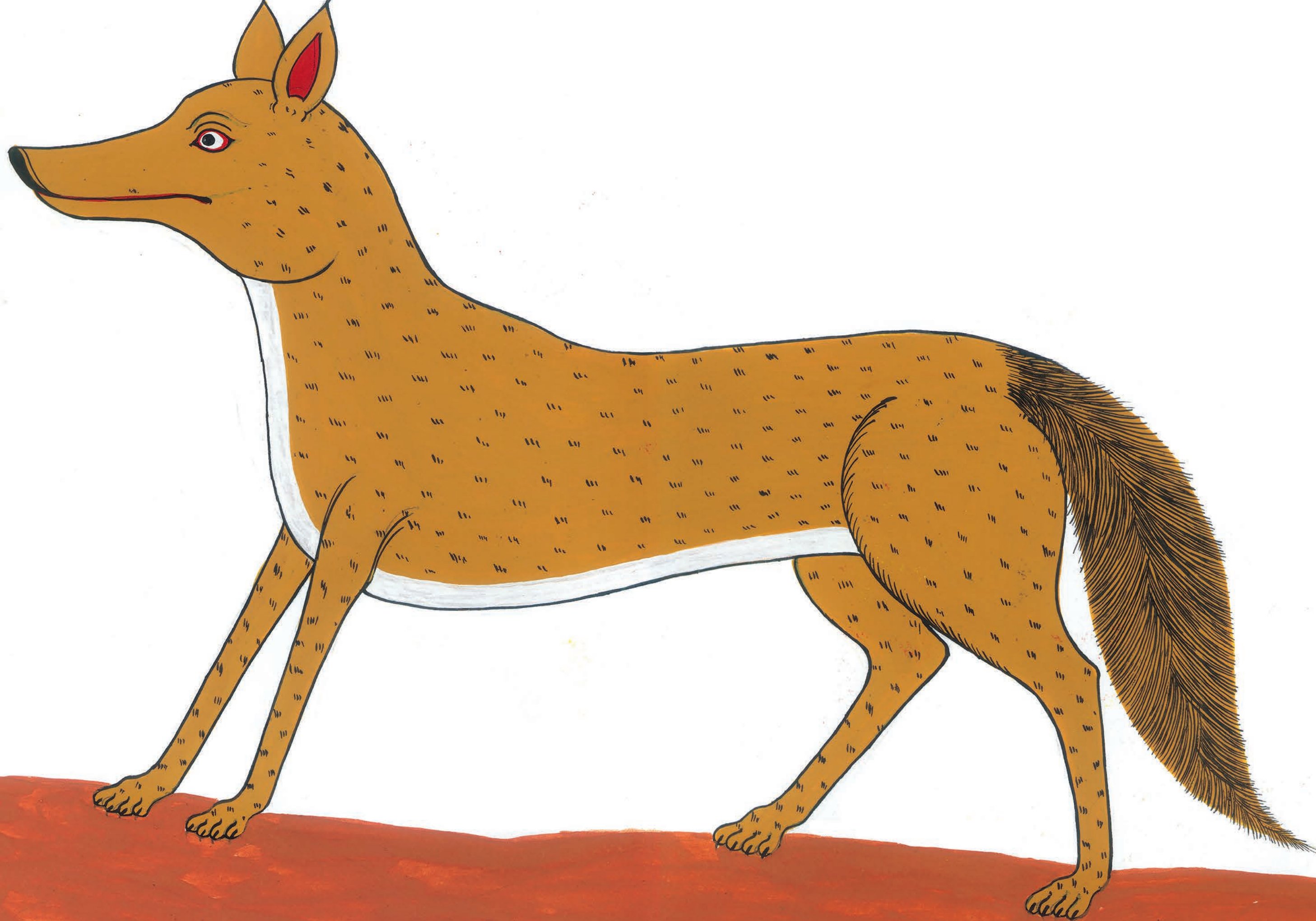


सियार ने अपने कानों से पूछा —
“तुमने कुछ सुना, चूजे कहाँ गायब हो
गए?”

“नहीं, हमने कुछ नहीं सुना।” —
सियार के कानों ने कहा।

“तुमने देखा, चूजे कैसे गायब
हुए?” — उसने अपनी आँखों से पूछा।

“हम तो आगे देख रही थीं।” —
आँखों ने कहा।

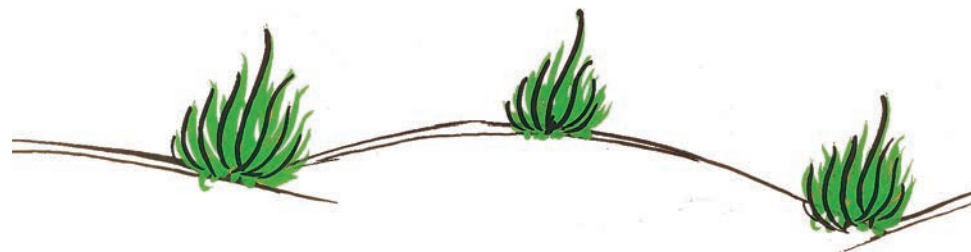




“तुम्हीं बताओ, मेरी झबरझड़ी पूँछ,
चूजे कहाँ गए?” — सियार ने ज़हरीली
आवाज़ में पूँछ से पूछा।

“अभी-अभी तक यहीं थे।” — पूँछ
भय से काँपते हुए बोली।

“तो यह बात है। झूठी! मेरे ही खाए
से फलती-फूलती है। झबरी होती है।
मुझे ही ठगती है। ठहर तुझे अभी सबक
सिखाता हूँ!” — कहते हुए सियार उधर
चला गया जिधर कुत्ते भौंक रहे थे।







जंगली सियार को देखते ही कुत्ते भौंकना बंद करके उसका पीछा करने लगे।

कुत्तों के आगे सियार इस तरह से भागा कि वे उसकी पूँछ को खा जाएँ, लेकिन कुत्तों के झुंड ने पूँछ के बजाय गर्दन दबोची। सियार फड़फड़ाते हुए निकल भागने की तरकीबें आजमा रहा था। चूज़ों को अब कोई डर नहीं था।





पुनर्लेखन



प्रभात

प्रभात का जन्म 1972 की बारिशों में राजस्थान के करौली जिले के रायसना गाँव में हुआ। इन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए. किया। वर्ष 2006 से वे शिक्षा और लोक साहित्य के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य कर रहे हैं। बज्जिका, छत्तीसगढ़ी, बैगा, अवधी, कुड़ुक, धावड़ी, भीली, बघेली इत्यादि लोक भाषाओं में बच्चों के लिए लगभग 50 से अधिक पुस्तकों का संपादन, पुनर्लेखन प्रभात के नाम है। इन्होंने एकलव्य, जुगनू, एनबीटी, रूम टू रीड, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), साहित्य अकादेमी, राजकमल आदि प्रकाशनों से पानियों की गाड़ियों में, बंजारा नमक लाया, घुमंतुओं का डेरा, अपनों में नहीं रह पाने का गीत, जीवन के दिन आदि 30 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। प्रभात को 2012 में युवा कविता समय सम्मान और 2019 में बिग लिटिल बुक अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है।

चित्रांकन

राधाश्याम राउत

राधाश्याम राउत, ओडिशा में भुवनेश्वर के पास स्थित धौली गाँव के रहने वाले हैं। वे ओडिशा की पारंपरिक चित्रकला शैली 'पट्टचित्र' में चित्रकारी करते हैं। राधाश्याम जी ने देश-विदेश के अनेक प्रकाशनों के साथ काम किया है, जैसे— ediciones ekaré, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), तारा बुक्स, पीताम्बर आदि। स्टोरी-टेलिंग मेड ईजी, सेक्रेड बनाना लीफ़, सर्कल ऑफ़ फ़्रेट, मून एंड सन आदि इनके द्वारा चित्रित पुस्तकें हैं।



1. कुछ हम कहें, कुछ तुम कहो!

क. मुर्गी अपने सात चूजों के साथ सोते हुए हवा के गीत सुन रही थी।

- हवा कौन-सा गीत गा रही होगी? अपनी भाषा में सुनाइए।
- आप कौन-से गीत सुनते हैं? अपनी भाषा में सुनाइए।
- आपने कौन-कौन से गीत या लोरी सुनते हुए सोए हैं?

ख. “मैं हूँ, तुम्हारा दोस्त! चरवाहे की गाय का बछड़ा।”- सियार ने आवाज़ बदलकर कहा।

- सियार ने कैसी आवाज़ में यह बात कही होगी?
- आप कैसी आवाज़ में यह बात कहेंगे?
- शेर, चींटी और तोता यह बात कैसी आवाज़ में कहते? अपनी आवाज़ बदलकर कहिए।

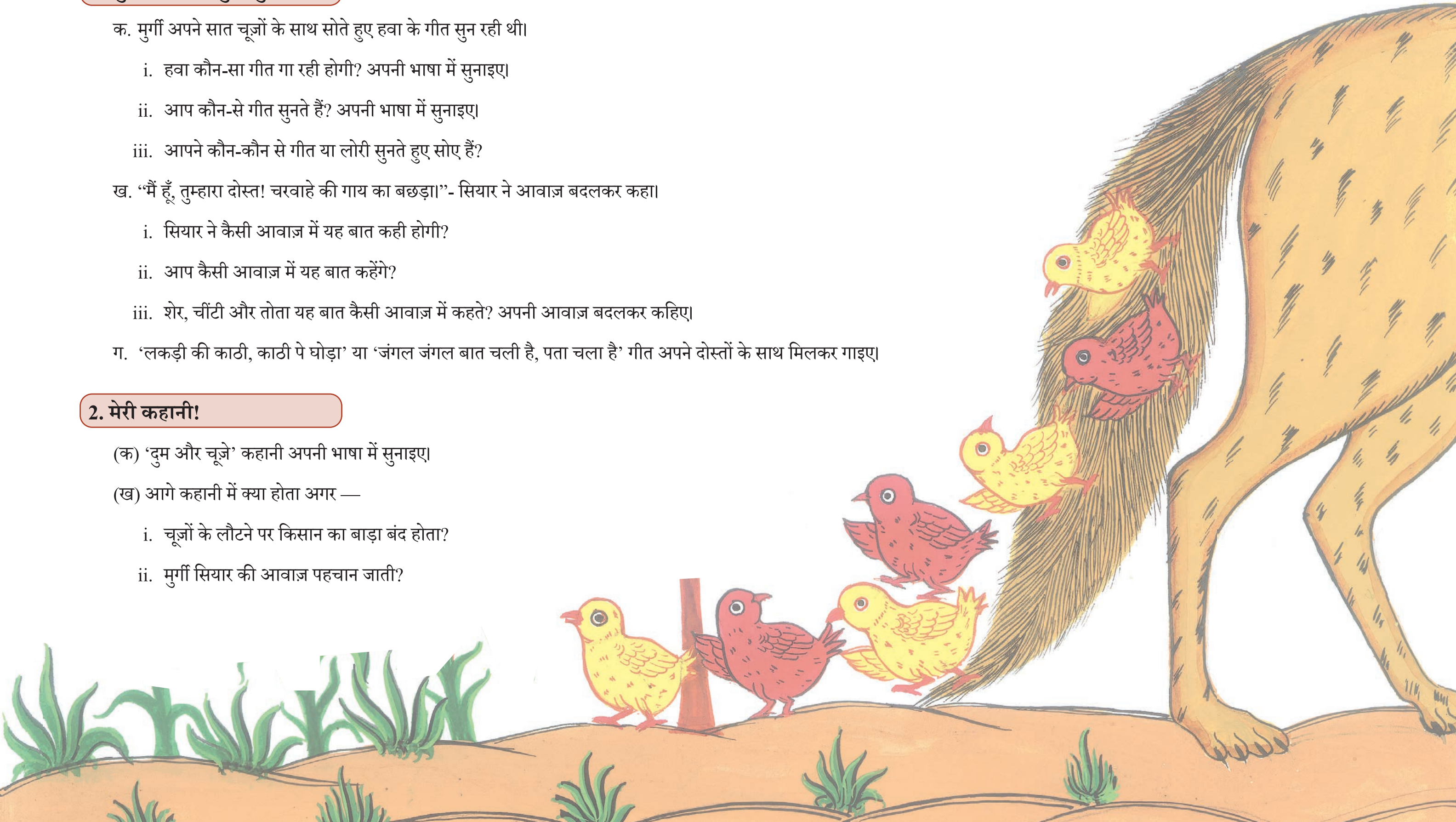
ग. ‘लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा’ या ‘जंगल जंगल बात चली है, पता चला है’ गीत अपने दोस्तों के साथ मिलकर गाइए।

2. मेरी कहानी!

(क) ‘दुम और चूजे’ कहानी अपनी भाषा में सुनाइए।

(ख) आगे कहानी में क्या होता अगर —

- चूजों के लौटने पर किसान का बाड़ा बंद होता?
- मुर्गी सियार की आवाज़ पहचान जाती?

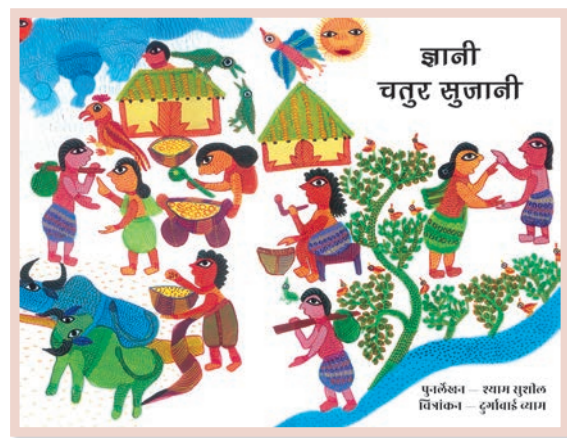
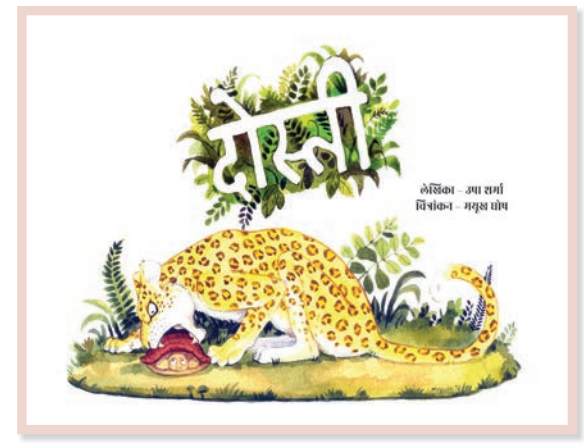
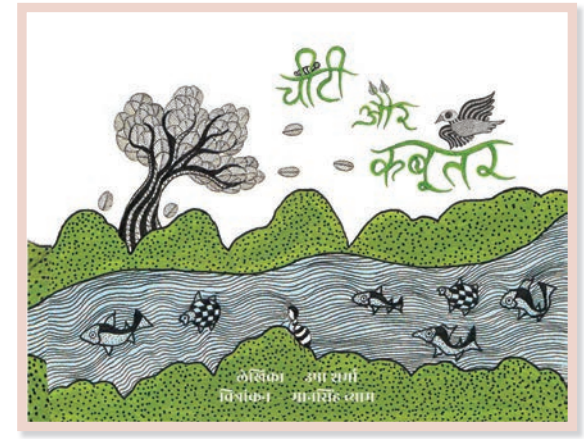
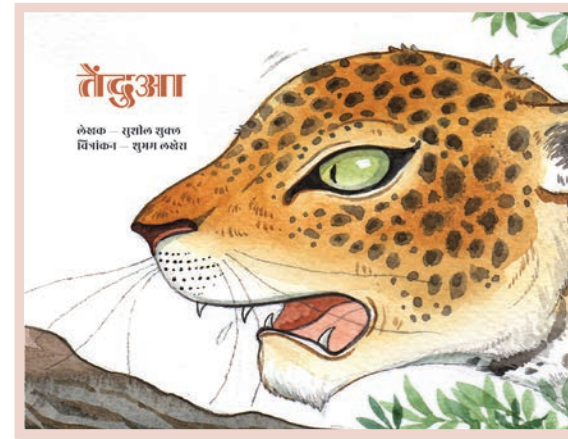
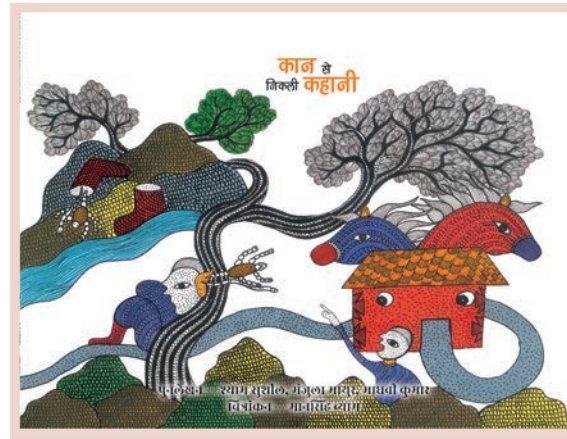


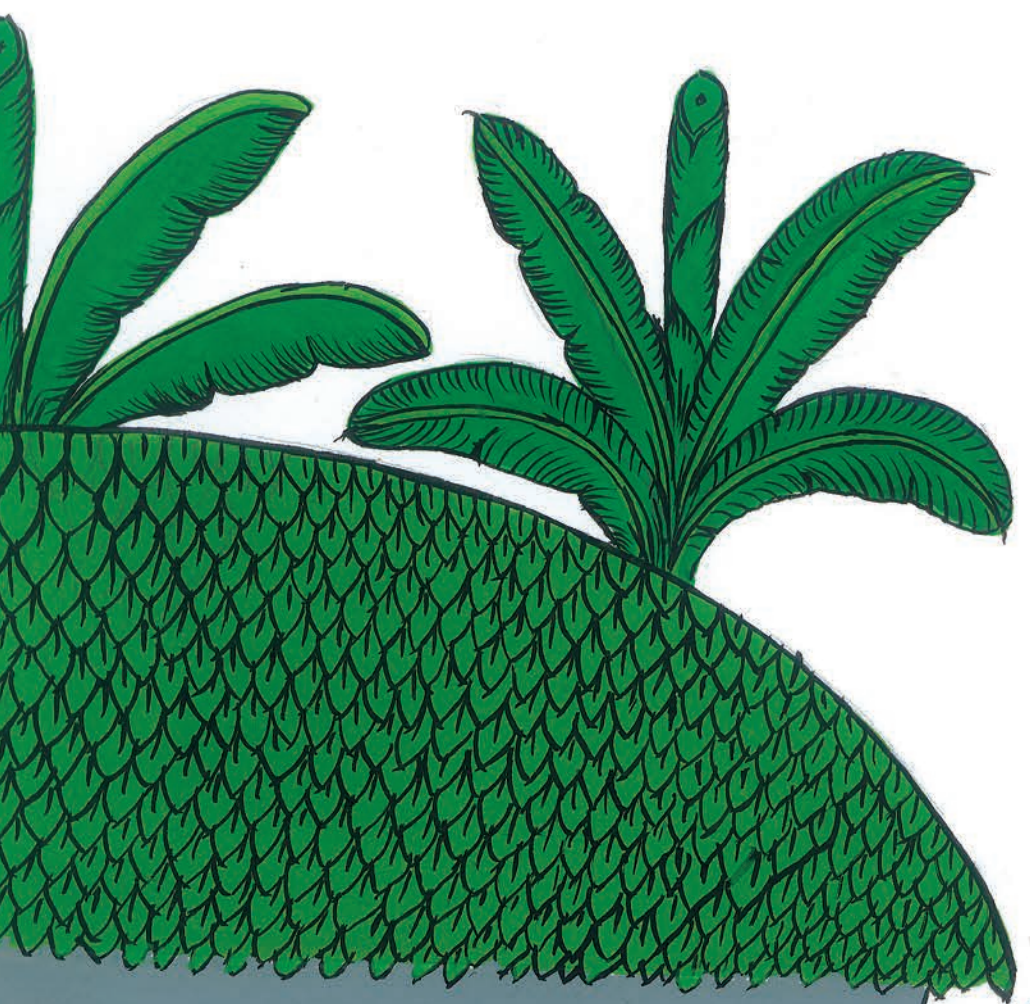
पट्टचित्र

पट्टचित्र ओडिशा की पारंपरिक चित्रकला है। 'पट्ट' का अर्थ होता है – कपड़ा। इसका अर्थ हुआ – कपड़े पर बनाया गया चित्र। आप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका *फिरकी बच्चों की* में पट्टचित्र लोकचित्र कला के और भी चित्र देख सकते हैं।

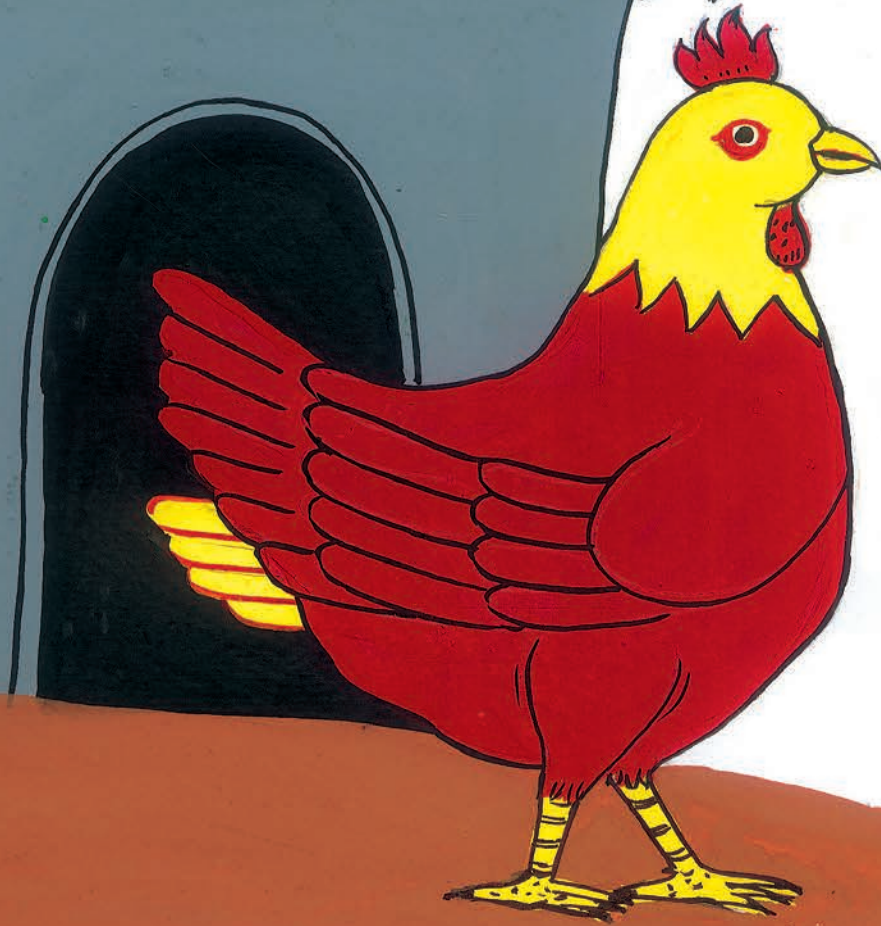


और भी हैं मजेदार कहानियाँ...





असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें
राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय –
आपका डिजिटल पुस्तकालय!



21200

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



ISBN 978-93-5292-849-1